।। आधा आबादी का दर्द ।।

भूमण्डलीयकरण एवं दूरसंचारक्रान्ति के युग में भ्रूणहत्या आधी आबादी के अस्तित्व पर खतरा खडा कर चुकी है । पुत्र मोह में बालिका भ्रूण की हत्या मां की कोख में की जा रही है । भ्रूणहत्या ने लिंगानुपात में असंन्तुलन पैदा कर दिया है। देश में प्रति हजार पुरू ा पर 927 महिलाये है।इस हत्या को बढावा दे रही है अल्ट्रासोनोग्राफी तकनीकी और एक्सपर्ट।सरकार लिंग परीक्षण को कानूनन अपराध घो ित कर चुकी है इसके बाद भी धडले से लिंग परीक्षण कर भ्रूणहत्याये हो रही है । भ्रूणहत्या को लेकर बडी बडी चर्चायें–परिचर्चायें होती रही है,अखबारों में बडी बडी खबरे छपती है । भ्रूणहत्या की चिन्ताओ में समाज और सरकार दबी जा रहा है इसके बाद भी लिंग परीक्षण हो रहा है। भ्रूणहत्या हो रही है ।यदि भ्रूणहत्या न होती तो लिंगानुपात में असन्तुलन कैसे होता । कानूनी प्रावधान होने के बाद भी परीक्षण करने अथवा कराने वालों को सजा नही हो पा रही है । आधी आबादी के साथ ऐसा अन्याय होता रहा तो क्या पुरू ा समाज दुनिया को आबाद बनाये रख सकेगा ।

जनसंख्या का भय कन्याभ्रूण को उकसााता है ऐसा कदापि नही है। इस हत्या के पीछे पुत्रमोह बंश–परम्पराओं एवं कुप्रथाओं का हाथ है । वर्तमान में दहेजप्रथा रूपी सामाजिक बुराई भी कन्याभ्रूणहत्या के लिये जिम्मेदार है । एक ाोध के अनुसार सिर्फ भारत में ही पिछले 20 व ाों के दौरान एक करोड कन्याभ्रूण का कत्ल में की कोख में कर दिया गया है । आश्चर्य की बात है कि पढे लिखे लोग ही इस तरह की हत्या करवा रहे है और लालची जीवन देने वाले अजन्मे कन्या भ्रूण का बध मां की कोख में कर रहे है । ना जाने किस मजबूरी मे मांतायें विरोध में नही खडी हो रही है । सम्भवतः यह वजह भी भ्रूण हत्या की खामोशी स्वीकृति कही जा सकती है । आधी आबादी की अस्तित्व की रक्षा के लिये आधी आबादी को आगे आना ही होगा बिना आगे आये भ्रूण हत्या जैसे अपराध पर रोक लगना कठिन कार्य होगा ।

सरकार जनसंख्याा नियन्त्रण को प्रोत्साहित कर रही है फिर भी जनसंख्या वृध्दि में विशे ा गिरावट नही आ रही है । आज बढती जनसंख्या समस्या नही लग रही है । लगता है समस्या आधी आबादी बन रही है तभी तो भ्रूणहत्या अपराध घो ित होने के बाद भी कन्याभ्रूण हत्या हो रही है और स्त्री–पुरू ा लिंग अनुपात के बीच असन्तुलन पैदा हो रहा है । यदि ऐसा असन्तुल बरकारा रहा तो वह दिन दूर नही जब लडके के ब्याह नही हो पायेगे अथवा बहुपतिप्रथा का प्रचलन हो जायेगा । यकीनन यह प्रथा मनु य जाति के विनाश का कारण होगी । ऐसे विनाश को रोकने के लिये जनसंख्या नियन्त्रण के अन्य साधनों का उपयोग करते हुए भ्रूण हत्या को रोकना होगा ।नारी –पुरू ा अधिकार समानता के लिये काम करना जरूरी होगा ।यदि कन्याभ्रूण हत्या नही रूकी तो पुरू ा समाज भी धीरे धीरे अपना अस्तित्व खो देगा । लिंगानुपात के सन्तुलन को बनाये रखने के लिये जरूरी है कि भ्रूणहत्या के अपराध पर विराम लगे । मां बाप पुत्र मोह से उपर उठकर सन्तान मोह की लालसा रखे चाहे वह सन्तान पुत्र हो या पुत्री पर भ्रूण हत्या जैसा अपराध न करने की कसम खाये ।जिस घर में बेटी न हो उस घर में बेटी के ब्याह से परहेज करना भी कन्या भ्रूणहत्या रोकने मे मददगार साबित हो सकता है । सम्भवतः कानूनी प्रावधान इसलिये कामयाब नही हो रहे है कि भ्रूण हत्या एकतरफा नही हो रहा है इसमें मां बाप दोनो ाामिल है ।यदि मां बाप में से एक भी इस हत्या के विरोध में उतर जाता तो भ्रूण हत्या रूक सकती है । इस हत्या की रोक पर सामाजिक समानता मील का पत्थर साबित हो सकती है यदि समाज आधी आबादी को पुरू ा के बराबर का दर्जा प्रदान करे दे । मनु य जाति को अपना अस्तित्व कायम रखना है तो आधी आबादी के दर्द को हरना ही होगा और भ्रूण हत्या पर पूर्ण विराम लगाना हो होगा । इसके बिना मनु य जाति के अस्तित्व पर संकट के बादल छाये रहेगे।क्यो.... अस्तित्व की रक्षा और भ्रूण हत्या जैसे जघन्य अपराध को रोकने के लिये हमारी कोई जिम्मेदारी नही बनती घ

नन्दलाल भारती 17.06.08 ।। लेखक साहित्यकार है ।।